CONTENTS

INDEX

TITLE	Page(s)
भारत में शिक्षक की भूमिका: वर्तमान सन्दर्भ में, पूर्व में एवं भविष्य की चुनौतियाँ - **डॉ0 सुष्मिता पन्त**	**02**
उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन - **ज्योति पुंडीर**	**20**
Importance of Moral Values in Education in Present Day Life – **Mr. Rakesh Kumar Keshari, Dr. Shivpal Singh**	**30**
Domestic violence against women in India - **Saba Hashmi**	**37**
A Study on Motivation of Underachiever High School Students for Academic Performance -**Mr. Manoj Kumar**	**43**

DVSIJMR
ISSN NO 2454-7522

उच्च प्राथमिक स्तर के विद्दार्थियों के पारिवारिक वातावरण का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन

ज्योति पुंडीर
सह प्राध्यापिका
दीवान इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज

सार

इसमें पारिवारिक वातावरण का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है | हम देखते हैं छात्र विद्यालय में केवल **6** घंटे रहता है | शेष **18** घंटे वह अपने माता-पिता के संरक्षण में रहता है | अतः स्कूल के नियंत्रित पर्यावरण के प्रभाव की अपेक्षा स्कूल से बाहर संचालित शक्तियों का प्रभाव अधिक महत्वपूर्ण है | इसमें झाँसी क्षेत्र के शहरी क्षेत्र संचालित जूनियर हाईस्कूल के छात्र व छात्राओं पर अध्धयन किया है जिसमें प्रतिनिधि न्यादर्श से सूचनाएं प्राप्त करने के लिये - प्रश्नावली , अनुसूची , साक्षात्कार आदि का प्रयोग किया गया है |अध्ययन के पश्चात यह देखा गया कि सामान्यतः उच्च उपलब्धि वाले विधार्थियों के माता-पिता , निम्न उपलब्धि वाले विधार्थियों के माता-पिता की अपेक्षा, अपने बच्चो के प्रति अधिक विनम्र , अधिक विश्वास, व्यवहार में अधिक उत्साही और अधिक आशावादी, बच्चों से उनके सम्बन्ध अधिक विनम्र, अधिक उत्साही , अधिक औचित्यपूर्ण थे | अध्ययन में पारिवारिक वातावरण तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सकारात्मक संबंध का भी ज्ञान हुआ |

प्रस्तावना : –

मानव वास्तव में अपने वंश परंपरा व पर्यावरण की उपज है | जिसमें वह जीवन यापन करता है | बच्चे की समझ की तृप्ति या संतुष्टि वातावरण के प्रति होने वाली प्रतिक्रियाओं से होती है | वातावरण के साथ संघर्ष करना प्रत्येक प्रार्थी के जीवन

का मुख्य लक्ष्य है | विद्यार्थियों के भिन्न-भिन्न व्यवहार के पीछे उनके पारिवारिक वातावरण में भिन्नता का होना है |

रेमेंट **(1939)** ने व्याख्या दी कि "दो बालक एक कक्षा में उपस्थित रह सकते है | एक अध्यापक एवं संस्था के प्रभाव में रहते है और एक ही प्रकार की क्रियाएं कर सकते है | परन्तु विभिन्न परिवारों से आने के फलस्वरूप उनके ज्ञान, अभिरचनाओं, भावव्यक्ति एवं नैतिक भाव भिन्न होते हैं |

स्टॉट **(1939)** ने कहा कि विधार्थी की गुणात्मक उपलब्धि पारिवारिक वातावरण पर निर्भर करती है | अच्छे पारिवारिक वातावरण से आने वाले छात्र अच्छी उपलब्धियां प्राप्त करते हैं | जबकि बुरे पारिवारिक वातावरण से आने वाले छात्रों की कक्षा में निकृष्ट उपलब्धि होती है |

यह देखा गया है कि जो माता-पिता अपने बच्चो के दुःख-सुख में प्रतिभाग करते हैं और उनके साथ आनंदमय समय व्यतीत करते हैं उनके पुत्र व पुत्रिओं की अच्छी उपलब्धि के प्राप्त होने की सम्भावना उन बच्चो की अपेक्षा जिनके माता-पिता का संबंध अपने बच्चों से कम अनुकूल होता है अधिक होता है |

भारत वर्ष में अधिकतर माता - पिता निर्धन व अशिक्षित हैं उनका मुख्य उद्देश्य जीविकोपार्जन है | वे अपने बच्चों के भविष्य के विषय में नहीं सोचते हैं | वे अनुभव करते हैं कि अपने बच्चों को शिक्षित करने का दायित्व उन्हें स्कूल में प्रवेश कराने पर ही समाप्त हो जाता है |

जो बच्चा घर से अनिच्छापूर्वक स्कूल जाता है या उसे धकेला जाता है वह संवेदन शुन्य रहता है और कक्षा में उसका प्रदर्शन असंतोषजनक रहता है| इससे बालक के संस्कार, विचार अच्छे नहीं होते है और बच्चा ख़राब माहौल में रहता है तो उसकी शैक्षिक उपलब्धि पर अच्छा प्रभाव नहीं पड़ता है और उसका मन पढाई से हटता चला जाता है| बच्चो का मन पढाई से हटने के बहुत से कारक हो सकते हैं –

1) माता - पिता का अशिक्षित होना |
2) आर्थिक अभाव का होना|
3) माता - पिता का अपने बच्चो की पढाई पर ध्यान ना देना|

इन सब कारको से जिज्ञासा उत्पन्न हुयी कि पारिवारिक वातावरण का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन करने का मन बनाया|

क्रो एण्ड क्रो **(1962)** गृह स्थान ऐसा होना चहिये जहां बच्चा क्रियाओं में प्रतिभागी ही न बन सके बल्कि आराम कर सके तथा अपनी ऊर्जा को संचारित कर सके | शिक्षित माता - पिता अपने बच्चो को अधिकतम भावात्मक सुरक्षा प्रदान करने का भरसक प्रयास करते हैं | वे विश्वास नहीं करते हैं कि दंड से अच्छे परिणाम प्राप्त होते हैं | वे अपने बच्चो को कड़ा परिश्रम करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं|

कुछ परिवार में माता – पिता का बच्चो का साथ संबंध बहुत अच्छा होता है और बच्चे प्रसन्नता अनुभव करते हैं । यह प्रसन्नता बच्चे को समाज के अनुकूल ढलने में सहायक होता हैं| दूसरे परिवार में इसके विपरीत बच्चों को माता – पिता से असंतोष प्राप्त होता है तो बच्चे अप्रसन्नता तथा क्षुब्द हो जाते हैं ।

कुछ बच्चे प्रथम कुछ वर्षो के पूर्ण होने पर स्कूल छोड़ देते हैं । प्राइमरी शिक्षा पूर्ण करने के बाद बहुत बड़ी संख्या में बच्चे स्कूल छोड़ देते हैं| यह सब परिश्रम व प्रयास का ही हास है । इस असफलता व् क्षति का मुख्य कारण पारिवारिक प्रतिकूल परिस्थितियाँ हैं । स्कूल जाने वाले बच्चों को अपने माता – पिता के कुछ निर्देश की आवश्यकता होती है और स्कूल कार्य हेतु कुछ ध्यान की आवश्यकता होती है ।

पारिवारिक वातावरण व उपलब्धि के संबंध का अध्ययन करने तथा प्रमाणित करने से शिक्षाशात्रियों को अध्यापकों को शैक्षिक क्रियाओं को प्रोत्साहित करने और अच्छा परिणाम प्रदर्शित करना संभव हो सकेगा

। माता – पिता की अपने बच्चों के अधययन में रूचि उन्हें और अधिक अच्छा करने को प्रोत्साहित करती है और अच्छे परिणाम प्राप्त करने में क्रियाकलापों में रूचि ले सकते हैं ।

व्यक्तिगत भिन्नता के लिए सम्मान, पुरस्कार का महत्त्व, सहपाठ्यक्रमीय क्रियाकलापों को उपयुक्त महत्व दिया जाना चाहिये। उन्हें भावात्मक सुरक्षा प्रदान करके माता – पिता अपने बच्चों को अपने गुणों का प्रदर्शन करने के लिए उनकी सहायता कर सकते हैं ।

उद्देश्य :-

1) छात्र / छात्राओं के पारिवारिक वातावरण का मूल्यांकन करना।
2) पारिवारिक वातावरण तथा छात्र / छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि के सम्बन्ध का अध्ययन करना।
3) छात्र / छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले वातावरण को उच्चतम प्रभावी आयामों को चिन्हित करना।

परिकल्पनायें :-

DVSIJMR
ISSN NO 2454-7522

1) उच्च उपलब्धि स्तर तथा निम्न उपलब्धि स्तर के विधार्थियों में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2) उच्च उपलब्धि स्तर तथा निम्न उपलब्धि स्तर के छात्रों में कोई अंतर नहीं है।
3) उच्च उपलब्धि स्तर तथा निम्न उपलब्धि स्तर की छात्राओं में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

कार्यप्रणाली/Methodology:-

अनुसन्धान का आवश्यक आधार जनसँख्या होती है । परन्तु सम्पूर्ण जनसँख्या पर अध्ययन करना कठिन होता है इसलिये प्रतिनिधि न्यायदर्श से वांछनीय सूचनाएँ प्राप्त करने के लिए कुछ उपकरण जैसे - प्रश्नावली , अनुसूची , साक्षात्कार आदि का प्रयोग किया जाता है । प्रस्तुत शोध पत्र में शोधकर्ता ने संपूर्ण जनसँख्या पर अधययन न करके उसके लिए प्रतिनिधि न्यायदर्श का चयन किया है

न्यायदर्श:-

झाँसी क्षेत्र के शहरी क्षेत्र में स्थित जूनियर हाई स्कूल के छात्र एवं छात्रायें प्रस्तुत शोध पत्र के अधययन की जनसँख्या है । झाँसी के शहरी क्षेत्र में स्थित 15 जूनियर हाई स्कूल स्तर के विद्यालयों के 180 छात्र छात्राओं को न्यायदर्श सूचि में दो वर्गों में विभक्त किया गया ।

उपकरण(Tools):-

शैक्षिक सफलता पर पारिवारिक वातावरण का प्रभाव ज्ञात करने के लिए शोध में निम्न दो उपकरणों का प्रयोग कर आँकड़े किए:-

1) पारिवारिक वातावरण मापनी (प्रो० बीना शाह एवं प्रो० एम० पी० उनियाल)
2) सामान्य कक्षागत उपलब्धि परिक्षण (डा० ए० सेन गुप्ता एवं डा० ए० के० सिंह)

आंकड़ों का विश्लेषण:-

पारिवारिक वातावरण मापनी की सहायता से कक्षा -7 के प्राप्तांको के मध्यांक की गणना कर मध्यांक से अधिक प्राप्तांक वाले विधार्थियों से

उच्च उपलब्धि समूह तथा मध्यांक से निम्न प्राप्तांक वाले विधार्थिओं को निम्न उपलब्धि समूह निर्मित किए गए ।

उच्च उपलब्धि स्तर तथा निम्न उपलब्धि स्तर के विधार्थियों के पारिवारिक वातावरण में कोई सार्थक अंतर नहीं है ।

आंकड़ों का विश्लेषण

	विमा	सं०	मध्यमान	मानक विचलन	टी
1	स्वतंत्रता विरुद्ध नियंत्रण				
	A) उच्च उपलब्धि समूह	90	11.39	1.37	2.11**
	B) निम्न उपलब्धि समूह	90	7.19	1.53	
2	ध्यान देना विरुद्ध उपेक्षा करना				
	A) उच्च उपलब्धि स्तर	90	13.26	2.38	2.05**
	B) निम्न उपलब्धि स्तर	90	9.10	1.09	
3	प्रधानता विरुद्ध आज्ञानुकूलता				
	A) उच्च उपलब्धि समूह	90	13.09	2.3	1.3*
	B) निम्न उपलब्धि समूह	90	9.5	0.91	
4	स्वीकृति विरुद्ध अस्वीकृति				
	A) उच्च उपलब्धि समूह	90	11.27	0.34	0.52*
	B) निम्न उपलब्धि समूह	90	7.6	4.9	
5	विश्वास विरुद्ध				
	A) उच्च उपलब्धि समूह	90	13.23	0.90	1.75*
	B) निम्न उपलब्धि समूह	90	6.97	0.45	

DVSIJMR ISSN NO 2454-7522

6	प्यार विरुद्ध त्याग A) उच्च उपलब्धि समूह B) निम्न उपलब्धि समूह	 90 90	 10.9 6.3	 0.98 2.6	 1.5*
7	अपेक्षा विरुद्ध उपेक्षा A) उच्च उपलब्धि समूह B) निम्न उपलब्धि समूह	 90 90	 11.7 8.1	 3.6 3.5	 4.6**
8	उत्साह विरुद्ध उदासीनता A) उच्च उपलब्धि समूह B) निम्न उपलब्धि समूह	 90 90	 12.6 7.2	 4.8 4.5	 0.89*
9	न्याय विरुद्ध पक्षपात A) उच्च उपलब्धि समूह B) निम्न उपलब्धि समूह	 90 90	 14.4 8.1	 3.15 0.54	 14.6**
10	खुला संचार विरुद्ध नियंत्रित संचार A) उच्च उपलब्धि समूह B) निम्न उपलब्धि समूह	 90 90	 12.6 6.4	 0.09 1.8	 18.7**

** .05 पर सार्थकता स्तर

* सार्थक अंतर नहीं है

(पारिवारिक वातावरण मापनी की विभिन्न विमाओं पर अधययन करने पर प्राप्त टी परिणाम)

DVSIJMR ISSN NO 2454-7522

सार्थक अंतर नहीं पाया गया	सार्थक अंतर पाया गया
1. स्वतंत्रता विरुद्ध नियंत्रण 2. ध्यान देना विरुद्ध उपेक्षा करना 3. खुला संचार विरुद्ध नियंत्रित संचार	1. प्रधानता विरुद्ध आज्ञानुकूलता 2. स्वीकृति विरुद्ध अस्वीकृति 3. विश्वास विरुद्ध अविश्वास 4. प्यार विरुद्ध त्याग 5. उत्साह विरुद्ध उदासीनता 6. अपेक्षा विरुद्ध उपेक्षा 7. न्याय विरुद्ध पक्षपात

परिणाम और निष्कर्ष:-

उपरोक्त दर्शित सारणी से यह कहा जा सकता है कि माता-पिता का बच्चे के प्रति प्रधानता बच्चों की भावनाओं की स्वीकृति , बच्चों के प्रति उनका विश्वास और प्यार से , उनकी आशायें , बच्चों के प्रति उनका उत्साहपूर्ण व्यव्हार , बच्चों के प्रति पक्षपात पूर्ण व्यवहार नहीं होना बच्चों की सफलता को बढ़ाने में सहायक है। बच्चों के प्रति माता-पिता की आज्ञानुकूलता बच्चों की भावनाये अस्वीकृत , बच्चों के प्रति अविश्वास , बच्चों को प्यार के बदले त्याग की भावना,बच्चों की निराशायें , बच्चों के साथ अंतर अभद्र या निष्क्रिय व्यव्हार और माता-पिता व बच्चे के पक्षपातपूर्ण व्यवहार निम्न उपलब्धि स्तर की सफलता को कम कर देता है।

निम्न उपलब्धि स्तर की सफलता के सन्दर्भ में माता-पिता व् बच्चे के बीच संचार व उत्साहपूर्ण व्यवहार अर्थपूर्ण पाया गया। माता-पिता के खुले विचार बच्चों को माता-पिता के साथ स्वतंत्र सम्बंध स्थापित करने में सहायक होते हैं और बच्चे अपनी समस्याओं का समाधान सरलतापूर्वक कर पाता है। माता-पिता के अच्छे गुण बच्चों की सफलता के घोतक है।

इसके विपरीत नियंत्रित संचार माता-पिता व बच्चे के बीच एक बड़ी दूरी उत्पन्न करता है और सदैव बच्चा माता-पिता से कुछ कहते हिचकिचाता है अप्रसन्न रहता है।

माता-पिता तथा संरक्षक के लिए सुझाव:-

अंत मे निष्कर्ष को ध्यान में रखते हुए,अन्वेषक ने माता-पिता,संरक्षक को शेक्षिक कार्यो की सफलता के लिए निम्नलिखित सुझाव दिये

1) माता-पिता को बच्चों के शेक्षिक क्रियाकलापों के अनुसार उसमे रुचि लेनी चाहिये।

2) माता-पिता को बच्चो को उपहार देकर, उनको उत्साहित करना चाहिए और उनके अंदर उच्च शिक्षा के प्रति जागृति उत्पन्न करनी चाहिए।

3) माता-पिता को बच्चों के लिए उचित वातावरण को उत्पन्न करना चाहिए।जो उनको अच्छे काम करने के लिए प्रेरित करे।

4) माता-पिता के द्वारा बच्चों में अच्छे अध्ययन की आदतों को उत्पन्न करना चाहिए।

5) माता-पिता को यदा-कदा विद्यालय जाना चाहिए और अपने बच्चों के कार्य व समस्याओं के बारे में बातचीत करनी चाहिए।

6) माता-पिता को अपने द्वारा प्रयुक्त भाषा पर विशेष ध्यान देना चाहिए क्योंकि बच्चा भाषा प्रयोग माता-पिता से ही सीखता है।

7) बच्चो को दंड नही देना चाहिए, बल्कि उनकी गलती का एहसास प्यार से समझकर कराना चाहिए।

DVSIJMR ISSN NO 2454-7522

सन्दर्भ सूची : –

- Alexender,Rebecca,B,Inner equipment for family living childhood education (Washington)Vol 50,No.2,pp-90-95,Nov.1973
- Anderson,Very,J.Effect of classroom, Social climate on individual Research Journal,7(2).Pp.135-152,1970.
- Bernstein,B.Some sociological determinants of perception.
- Crow and Crow.Child Psychology,pp181-193,1962.
- Joshi Achievement and Family Adjustment,1977.
- Shah Beena. A Sociological study of Educational Development of Graduate students of Kum.Uni.with special reference to caste,Ph.D(edu)Kum.Uni,1981
- Kulshreshtha.L.A Study of certain factors related to different among bright students,Ph.D.Edu,Agra Uni.1981.

DVSIJMR
ISSN NO 2454-7522